हाशिए पर ज़िंदगी

लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी और ट्रांसजेंडर
एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय अमेरिकियों
का एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण

एलैन डेंग एवं केब्रिनी वियानी द्वारा

द नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स पॉलिसी इंस्टीट्यूट लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी और ट्रांसजेंडर लोगों के लिए ज्यादा समझ एवं समानता विकसित करने के उद्देश्य से शोध, नीति विश्लेषण और रणनीति विकास के प्रति समर्पित एक वैचारिक संगठन है।

वाशिंगटन, डीसी
1325 मेसाचुसेट्स एवे एनडब्ल्यू, सुइट 600
वाशिंगटन, डीसी 20005–4171
टेलीफोन 202 393 5177
फैक्स 202 393 2241

न्यूयॉर्क, एनवाई
80 मैडेन लेन, सुइट 1504
न्यूयार्क, एनवाई 10038
टेलीफोन 212 604 9830
फैक्स 212 604 9831

लॉस एंजिलिस, सीए
8704 सैंटा मोनिका बोलेवर्ड, सुइट 200
वेस्ट हॉलीवुड, सीए 90069
टेलीफोन 310 855 7380
फैक्स 310 358 9415

कैंब्रिज, एमए
1151 मेसाचुसेट्स एवेन्यू
कैंब्रिज, एमए 02138
टेलीफोन 617 492 6393
फैक्स 617 492 0175

मियामी, एफएल
3510 बिसकैयने बोलेवर्ड, सुइट 206
मियामी, एफएल 33137
टेलीफोन 305 571 1924
फैक्स 305 571 7298

मिन्नेपोलिस, एमएन
810 वेस्ट 31वीं स्ट्रीट
मिन्नेपोलिस, एमएन 55408
टेलीफोन/फैक्स 612 821 4397

theTaskForce@theTaskForce.org

www.theTaskForce.org

© 2007 द नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स पॉलिसी इंस्टीट्यूट

इस दस्तावेज़ का हवाला देते समय, हम निम्नलिखित उद्धरण की सिफारिश करेंगेः

डेंग,ए.,एवं वियानी,सी. (2007) *हाशिए पर ज़िंदगीः लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी और ट्रांसजेंडर एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय अमेरिकियों का एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण।* न्यूयॉर्कः द नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स पालिसी इंस्टीट्यूट

कार्यकारी सारांश

अमेरिकी जनगणना ब्यूरो (यू.एस. सेंसस ब्यूरो) ने 2005 में अनुमान लगाया कि अमेरिका में एक करोड़ 40 लाख एशियाई हैं। यह ऐसी संख्या है, जिसके अगले 50 साल में तिगुना हो जाने की उम्मीद है। वास्तव में, 2000 और 2003 के बीच, एशियाई अमेरिकियों की जनसंख्या 12.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी, जो कुल अमेरिकी आबादी की वृद्धि दर (3.3 प्रतिशत) की लगभग चार गुना है और राष्ट्र की हिस्पानवी एवं लातीनी–अमेरिकी आबादी के बाद दूसरी है। इस अत्यधिक वृद्धि के बावजूद विशेष रूप से उन एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय (एपीआई) अमेरिकियों के संबंध में मात्रात्मक, सामाजिक–जनसांख्यिकीय आंकड़े जमा करने के बहुत कम प्रयास हुए हैं जो खुद को लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी या ट्रांसजेंडर के रूप में चिह्नित करते हैं।

द नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स (टास्क फोर्स) पॉलिसी इंस्टीट्यूट ने एपीआई एलजीबीटी अमेरिकियों के बुनियादी जनसांख्यिकीय आंकड़े जमा करने और भेदभाव एवं उत्पीड़न, और साथ ही उनकी राजनीतिक एवं नागरिक भागीदारी के अनुभवों पर बहुल अल्पसंख्यक पहचानों के प्रभावों के मात्रात्मक विश्लेषण के लिए 2005 से लेकर अब तक एक दर्जन से ज्यादा एपीआई एलजीबीटी सामुदायिक संगठनों के साथ सहयोग किया है।

जनसांख्यिकी

यह अध्ययन 860 से ज्यादा उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित है, जो अमेरिका में एपीआई एलजीबीटी व्यक्तियों का अब तक का सबसे बड़ा सर्वेक्षण है।

भौगोलिक वितरण

उत्तरदाता कुल मिलाकर 38 राज्यों और कोलंबिया जिले में इस तरह से रहते हैं जो अमेरिका में एशियाइयों और प्रशांत द्वीपियों के भौगोलिक वितरण से बहुत मेल खाता है। सबसे ज्यादा (37 प्रतिशत) उत्तरदाता कैलिफोर्निया के रहने वाले हैं, उनके बाद न्यूयॉर्क (18 प्रतिशत), इलिनॉयस (5 प्रतिशत), मेसाचुसेट्स (5 प्रतिशत) और कोलंबिया ज़िले (4 प्रतिशत) का नंबर है।

जातीयता

एपीआई कौन हैं?

शब्दावली एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय (एपीआई) में जातीय समूहों की एक विशाल श्रृंखला समाहित है। उनके पास अनूठे इतिहास, संस्कृतियां और अपने मूल एशियाई या प्रशांत द्वीपीय पैतृक देश – दोनों के अंदर प्रवसन तथा अमेरिका में रहने के अनुभव है। एपीआई में भारत, बगलादेश, पाकिस्तान और श्रीलंका जैसे दक्षिण एशियाई देशों; वियतनाम, थाईलैंड और कंबोडिया जैसे दक्षिणपूर्व एशियाई देशों; चीन, जापान और कोरिया जैसे पूर्व एशियाई देशों; फिलीपीन और इंडोनेशिया जैसे प्रशांत द्वीप देशों में रहने वाले जातीय समूहों के साथ पैतृक संबंध वाले लोग और समोआ, गुआम तथा हवाई के मूल लोग शामिल हैं।

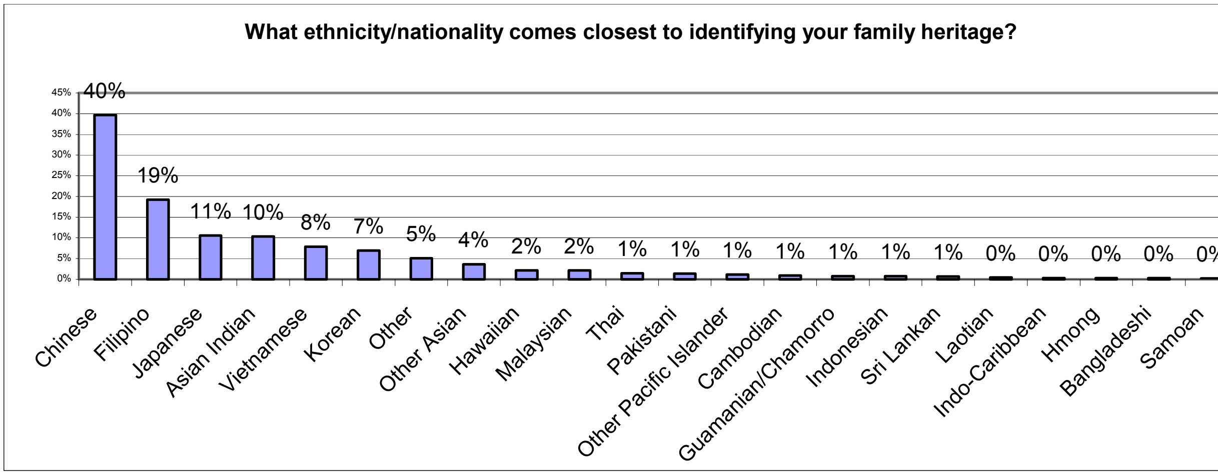

इस नमूने में एक दर्जन से ज्यादा जातियों का प्रतिनिधित्व हुआ, जिनमें चीनी (40 प्रतिशत), फिलीपीनी (19 प्रतिशत), जापानी (11 प्रतिशत) और एशियाई भारतीय (10 प्रतिशत) शामिल हैं। वियतनामी, कोरियाई, हवाई, मलेशियाई, थाई और पाकिस्तानी उत्तरदाताओं के एक छोटे हिस्से ने भी इसमें भाग लिया।

अमेरिकी जनगणना ब्यूरो के अनुसार चीनी समुदाय (24 प्रतिशत) के बाद अमेरिका में सबसे बड़े एपीआई जातीय समूहों में फिलीपीनी (18 प्रतिशत), एशियाई भारतीय (16 प्रतिशत), वियतनामी (11 प्रतिशत), कोरियाई (11 प्रतिशत) और जापानी (8 प्रतिशत) हैं। यह तुलना दिखाती है कि हमारे सर्वेक्षण के उत्तरदाता देश भर के एपीआई जन की विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

नागरिकता

सर्वेक्षण के बहुसंख्यक उत्तरदाता (55 प्रतिशत) अमेरिका में पैदा हुए नागरिक थे, जबकि 27 प्रतिशत देशीकृत नागरिक थे। 19 प्रतिशत के करीब गैर–नागरिक थे।

तुलनात्मक रूप से 2000 जनगणना में यह पाया गया कि एशियाई अमेरिका में जन्मे नागरिक (31 प्रतिशत), देशीकृत नागरिक (34 प्रतिशत) और गैर–नागरिक (35 प्रतिशत) में बराबर–बराबर बंटे हैं। यह इंगित करता है कि एपीआई एलजीबीटी व्यक्तियों के हमारे नमूने में संभवतः अमेरिका की व्यापक एपीआई आबादी से ज्यादा अमेरिकी नागरिक (जन्मना या देशीकृत) शामिल हैं।

जन्मजात भाषा

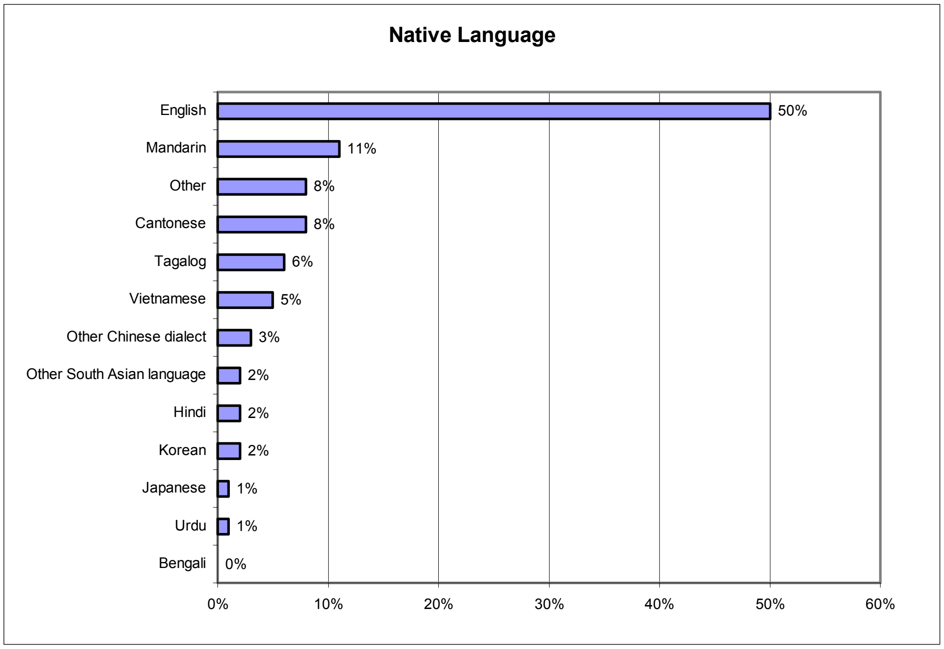

मात्र 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अंग्रेजी उनकी जन्मजात भाषा है। मन्दरिन (11 प्रतिशत), कैंटोनीज (8 प्रतिशत), टेगालोग (6 प्रतिशत) और वियतनामी अकसर बोली जाने वाली जन्मजात भाषा के रूप में इंगित की गई हैं।

तुलनात्मक रूप से अमेरिकी जनगणना ब्यूरो ने रिपोर्ट दी है कि लगभग 79 प्रतिशत एशियाई घर पर अंग्रेजी के बजाय दूसरी भाषा बोलते हैं, लेकिन लगभग 60 प्रतिशत लोगों ने "बहुत अच्छे ढंग" से अंग्रेजी बोलने के बारे में सूचित किया है। चीनी, टेगालोग और वियतनामी अंग्रेजी और स्पेनी के बाद अमेरिका में पांच सर्वाधिक बोली जानी वाली भाषाओं में हैं। कोरियाई भाषा का स्थान सातवां है।

लिंग एवं लैंगिक पहचान

भागीदारों में से 53 प्रतिशत ने अपनी पहचान पुरुष के रूप में, 41 प्रतिशत ने महिला के रूप में और 10 प्रतिशत ने ट्रांसजेंडर के रूप में की। यह आंकड़ा जुड़ कर 100 प्रतिशत से ज्यादा हो गया क्योंकि "पुरुष" और "महिला" श्रेणियों और एक ट्रांसजेंडर श्रेणी में निशान लगाने वाले भागीदारों को दोनों श्रेणियों में गिना गया।

भागीदारों के लिंग और लैंगिक पहचान की ज्यादा सटीक तस्वीर प्रदान करने के लिए सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं से अपना लिंग चिह्नित करने के लिए कहा गया और उन्हें दिए गए निम्नलिखित विकल्पों में से लागू सभी पर निशान लगाने के लिए कहा गयाः "पुरुष", "महिला", "ट्रांसजेंडरः महिला से पुरुष", " ट्रांसजेंडरः पुरुष से महिला", " ट्रांसजेंडरः ट्रांससेक्सुअल", " ट्रांसजेंडरः जेंडरक्वीयर/द्विलैंगिक/उभयलिंगी" और "अन्य"। चूंकि ट्रांसजेंडर पहचान चुनने वाले उत्तरदाताओं की संख्या बहुत कम थी, इसलिए सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए उन्हें "ट्रांसजेंडर" की एक एकल श्रेणी में मिला दिया गया।

यौनिक रुचि

47 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने खुद को समलैंगिक के रूप में चिह्नित किया, 19 प्रतिशत ने लेस्बियन के रूप में और 9 प्रतिशत ने द्विलिंगी के रूप में खुद को चिह्नित किया। 20 प्रतिशत ने "विचित्र" ("queer") के रूप में खुद को चिह्नित किया। इस लेबल को चुनने वाली महिलाओं की संख्या पुरूषों के मुकाबले दुगुनी थी।

संबंध स्तर

एक तिहाई उत्तरदाताओं ने खुद को समर्पित संबंध की श्रेणी में बताया और 10 प्रतिशत का कोई घरेलू पार्टनर थे।

भेदभाव

लगभग सभी उत्तरदाताओं (98 प्रतिशत) ने अपनी जिंदगी में भेदभाव और/या उत्पीड़न के कम से कम एक रूप का अनुभव किया था।

- पचासी प्रतिशत ने बताया कि उन्हें अपनी नस्ल या जाति के कारण भेदभाव और/या उत्पीड़न का सामना करना पड़ा
- पचहत्तर प्रतिशत ने बताया कि उन्हें अपनी यौन रुचि के कारण भेदभाव और/या उत्पीड़न का सामना करना पड़ा

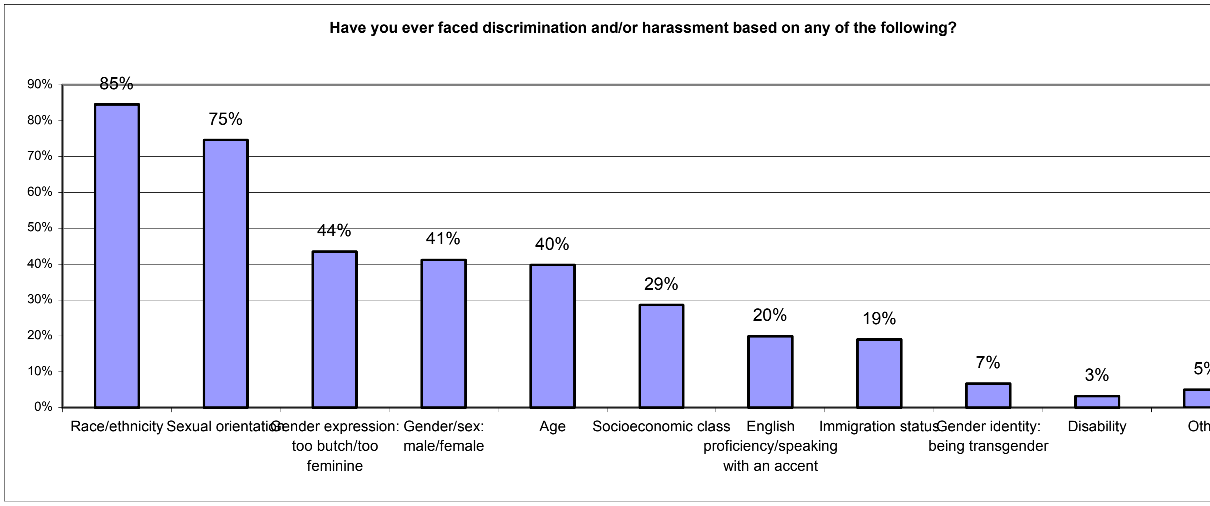

करीब 10 में से सात (69 प्रतिशत) ट्रांसजेंडर उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें इस कारण भेदभाव से गुज़रना पड़ा क्योंकि वे ट्रांसजेंडर हैं।
करीब तमाम (89 प्रतिशत) उत्तरदाता सहमत थे कि व्यापक एपीआई समुदाय में होमोफोबिया और ट्रांसफोबिया एक समस्या है।
अठहत्तर प्रतिशत ने सहमति जताई कि श्वेत बहुल एलजीबीटी समुदाय के अंदर एपीआई एलजीबीटी को नस्लवाद का अनुभव करना पड़ता है।

मौखिक एवं शारीरिक उत्पीड़न

ज्यादातर लोगों को एशियाई या प्रशांत द्वीपीय उद्गम (77 प्रतिशत) के चलते या लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी या ट्रांसजेंडर (74 प्रतिशत) होने के चलते अपनी जिंदगी में किसी समय मौखिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है।

पांच में से करीब एक (19 प्रतिशत) ने बताया कि एशियाई या प्रशांत द्वीपीय उद्गम के चलते उन्हें शारीरिक उत्पीड़न झेलना पड़ा। सोलह प्रतिशत ने बताया कि लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी या ट्रांसजेंडर होने के चलते उन्हें शारीरिक उत्पीड़न झेलना पड़ा।

नीतिगत प्राथमिकता

उत्तरदाताओं ने इंगित किया कि अमेरिका में तमाम एशियाइयों और प्रशांत द्वीपियों को जिन तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है, वे ये हैं: 1) प्रवसन (57 प्रतिशत), 2) मीडिया प्रतिनिधित्व (38 प्रतिशत) और 3) भाषाई दिक्कत (38 प्रतिशत)।
हमारे सर्वेक्षण के अनुसार एपीआई एलजीबीटी अमेरिकियों को जिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दों से रूबरू होना पड़ रहा है, वे ये हैं 1) घृणा संबंधी हिंसा/उत्पीड़न (39 प्रतिशत), 2) मीडिया प्रतिनिधित्व (37 प्रतिशत), 3) वैवाहिक समता (35 प्रतिशत) और 4) प्रवसन (32 प्रतिशत)।

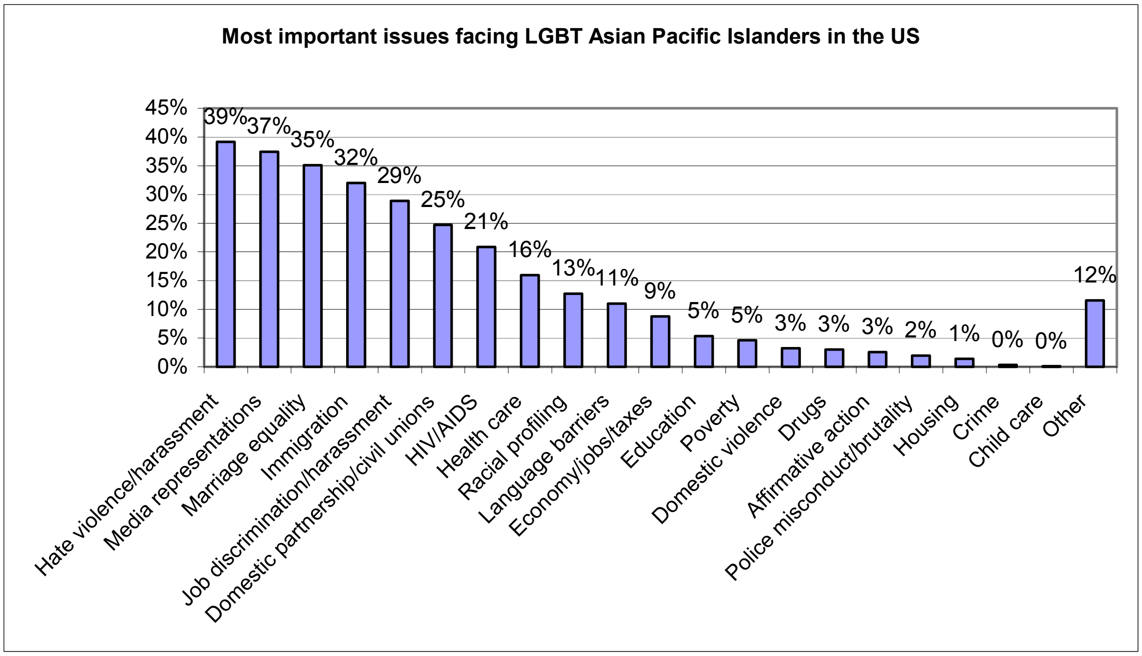

राजनीतिक व्यवहार

हमारे नमूने में एपीआई एलजीबीटी राजनीतिक रूप से सक्रिय हैंः 67 प्रतिशत ने बताया कि उन्होंने 2006 के मध्यावधि चुनाव में वोट डालने की योजना बनाई है (करीब 20 प्रतिशत ने बताया कि वे वोट डालने के पात्र नहीं हैं)।

वोट डालने के पात्र उत्तरदाताओं में से एक जबरदस्त बहुमत (67 प्रतिशत) डेमोक्रेटिक पार्टी से जुड़ा था। 20 प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी राजनीतिक पार्टी से नहीं जुड़े थे। दो प्रतिशत रिपब्लिकन थे।

उत्तरदाताओं के बड़े बहुमत ने यह भी बताया कि वे अन्य राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। इनमें याचिकाओं पर हस्ताक्षर करना (81 प्रतिशत), मार्च या रैलियों में हिस्सा लेना (65 प्रतिशत) और अपने निर्वाचित अधिकारियों से संपर्क करना (55 प्रतिशत) शामिल है।

निष्कर्ष

कार्यकर्ताओं ने प्रायः साक्ष्य इंगित किए हैं कि एपीआई एलजीबीटी लोग व्यापक उत्पीड़न एवं भेदभाव का सामना करते हैं। राष्ट्रव्यापी नमूने से मिले आंकड़ों पर आधारित यह अध्ययन पुष्टि करता है कि नस्ल, जाति, यौन रुचि एवं लैंगिक पहचान समेत अनेक कारकों पर आधारित भेदभाव और उत्पीड़न एक समस्या है जिसे व्यापक एपीआई *एवं* एलजीबीटी समुदायों को हल करने की आवश्यकता है। यह इस अध्ययन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्षों में से एक है।

सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं के बीच जिन महत्वपूर्ण नीतिगत मुद्दों पर ज्यादा आम सहमति थी, उनमें प्रवसन, घृणा संबंधी हिंसा एवं उत्पीड़न से निबटना, मीडिया प्रतिनिधित्व, स्वास्थ्य सेवा संबंधी मुद्दे (खास तौर पर एचआईवी/एड्स), अर्थव्यवस्था/रोजगार एवं भाषाई समस्याएं शामिल हैं। कार्यकर्ता और शोधकर्ता इन निष्कर्षों का इस्तेमाल स्थानीय, प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत बदलावों की वकालत करने और उन्हें लागू कराने के लिए आधार के रूप में कर सकते हैं।

यह अध्ययन एपीआई एलजीबीटी लोगों के भोगे हुए अनुभवों की अंतःदृष्टि प्रदान करता है। नस्लवाद, होमोफोबिया/ट्रांसफोबिया, यौनवाद और वर्गवाद के पहलुओं की समझ और इनके एपीआई एलजीबीटी लोगों को प्रभावित करने के तरीके की समझ के माध्यम से प्रमुख मुद्दे सक्रिय गोलबंदी के लिए आवर्ती अवसरों के रूप में उभर कर आते हैं। इस रिपोर्ट में जिन मुद्दों पर चर्चा की गई है, वे एक श्वेत बहुल एलजीबीटी पृष्ठभूमि में एक जातीय या नस्ली अल्पसंख्यक के रूप में, और उसी तरह इतरलिंगी प्रधान एपीआई वातावरण में एलजीबीटी भागीदारों के रूप में समुदाय के सदस्यों के अनुभवों के केन्द्र बिंदु को छूते हैं। अपनी राजनीतिक भागीदारी की उच्च्च दरों के साथ उत्तरदाताओं ने जो नीतिगत मुद्दे चिह्नित किए, वे एक ऐसे व्यस्त, सक्रिय समुदाय को दिखाते हैं जो एलजीबीटी समुदाय में नस्ल के इर्द–गिर्द विमर्श को और एपीआई समुदाय में यौनिकता को रुपांतरित करने के सार्थक अवसर खोजने की कोशिश कर रहा है।